भगवत् कृपा

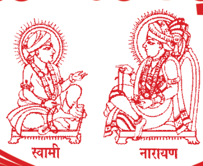

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 32 अंक :1 | 24.1.2009 शनिवार (जनवरी – फरवरी) | शुल्क – प्रति अंक : 20.00, वार्षिक : 100.00

हे स्वामी! आप ही हम सभी के – बृहद् गुणातीत समाज के शिरछत्र हैं...

जनवरी'०९ की शुरुआत में ही भव्यता से मनाए जाने वाले 'आत्मीय अमृत महोत्सव' की गूंज लगभग पिछले दो-तीन साल से हम सभी के कानों में गूंज रही थी और... वह पवित्र पावन अवसर पलक झपकते ही ११ दिसंबर की शाम को हमारे आंगन में आकर खड़ा भी हो गया... **११ दिसंबर '०८** की शाम को वडोदरा की धरती पर 'महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ पॅलॅस ग्राउंड' पर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गुरुहरि योगीजी महाराज के सूत्र **'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'** – प्रदर्शिनी का उद्‌घाटन हुआ... खूब भक्तिभाव, अत्यधिक परिश्रम से लगाई गई यह प्रदर्शिनी सभी के आकर्षण का केन्द्र बन गई। सिर्फ तीन-चार महीने में ही दिन-रात देखे बिना अथक् मेहनत करके गुरुभक्ति अदा करने संतों, युवकों, हरिभक्तों ने 'जंगल में मंगल' खड़ा कर दिया... सिर्फ 'प्रदर्शिनी' ही नहीं, बल्कि महोत्सव के स्टेज की सजावट, पंडाल, भोजन की व्यवस्था आदि के पीछे प.पू. स्वामिजी के प्रति की भक्ति, अनुपम प्रीति का सम्यक् दर्शन हो रहा था। ये सारी व्यवस्थाएं देख कर हर एक स्तब्ध तो हो ही रहा था, पर नतमस्तक भी था। सच, भगवान की शक्ति के बिना और भगवान प्रगटाई विभूति को राजी करने की ही एकमात्र भावना यदि ना हो, तो इतना बड़ा कार्य उठाया ही नहीं जा सकता।

चार दिन के महोत्सव में पहले दिन **१ जनवरी '०९** की सुबह 'विशाल यज्ञ' किया गया... सायं बहनों द्वारा प.पू. स्वामिजी के बचपन से लेकर अब तक के प्रेरणादायी जीवन को – गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ के अद्‌भुत संबंध को बखूबी सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में प्रदर्शित किया गया... यह कार्यक्रम देख कर सभी ने बहनों की भक्ति-भावना को दिल से सराहा...

दूसरे दिन **२ जनवरी'०९** की सुबह युवा अधिवेशन हुआ... गुरुहरि योगीजी महाराज के सूत्र **'युवकों मेरा हृदय हैं'** – पर निरंतर प्रयत्नशील प.पू. स्वामिजी द्वारा तैयार किया गया युवा समाज आज यहाँ एकत्रित हुआ था। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने युवा पीढ़ी को अपना लाभ दिया... सायं की सभा में प.पू. मुरारीबापुजी ने सभा को मार्गदर्शन दिया।

तीसरे दिन **३ जनवरी'०९** की सुबह सभा में प.पू. स्वामिजी ने सभी पर आशिषवर्षा करी... साथ ही कई मुक्तों ने अपने अनुभवों का लाभ दिया... प.पू. रमेशभाई ओझा, प.पू. चिदानंद मुनिजी, प.पू. चंद्रास्वामिजी ने सभा में उपस्थित होकर ना केवल सभा की शोभा बढ़ाई, बल्कि प.पू. स्वामिजी की आत्मीयता का बेजोड़ दर्शन कराया।

सभाओं के सभी सत्रों में युवक अपनी भक्ति अदा करने से पीछे ना रहे। उन्होंने समय-समय पर भक्तिनृत्यों द्वारा अपना कौशल नहीं, वरन् प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का माहात्म्य दर्शन कराया... और यूं भक्ति अदा करने के सुनहरे मौके में ३ जनवरी की सायं भी शामिल थी, जब प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को मुक्तों ने सिर्फ कंचन से नहीं, बल्कि अपने हृदय की भक्ति से तोला! वह थी 'स्वर्णतुला'!!

और... फिर अगले दिन **४ जनवरी '०९** की मुख्य सभा का दिन भी आ गया। प.पू. स्वामिजी को विशाल कलश के आकार के वाहन पर पंडाल में लाया गया। स्टेज पर प्रवेश करने से पूर्व युवकों ने 'विविधता में एकता' के प्रतीक रूप 'बधाई गीत' तीन-चार अलग-अलग प्रादेशिक भाषाओं में भक्तिनृत्य सहित प्रस्तुत किया और... सभा का मंगल प्रारंभ हुआ। भारत माता मंदिर के अधिष्ठाता एवं समन्वय सम्राट प.पू. सत्यमित्रानंदगिरिजी महाराज महोत्सव की अंतिम सभा के मुख्य अतिथि थे। आशिषवर्षा से प.पू. स्वामिजी ने आज भी पूरे समाज को मानो भिगो दिया... साथ ही संतों–मुक्तों ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए प.पू. स्वामिजी का माहात्म्य दर्शन कराया एवं कई कलात्मक हार-मालाएँ तथा भेंट अर्पण करी... उत्तर भारत के मुक्तों की ओर से पू. मल्कानी अंकल, पं. बलवंतराय भारद्वाजजी (जगरांव-पंजाब) एवं प.भ. आशिष शाह ने प.पू. स्वामिजी को एक स्मृति भेंट दी, जिसमें भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत परंपरा के वारिसदारों की मूर्ति स्थापित करी थी; बीचोबीच गुणातीत समाज का मोनोग्राम बना कर उसके ऊपर एक स्वर्ण छत्तर में प.पू. स्वामिजी की मूर्ति रखी गई थी और... नीचे प्रार्थना लिखी थी–

हे स्वामी! आप ही हम सभी के- बृहद् गुणातीत समाज के शिरछत्र हैं...

यूं, यह आत्मीय महोत्सव मुक्तों के दिलों पर अगणित चिरंजीव स्मृतियाँ छोड़ गया... जिस-जिसने इस महोत्सव की दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि से सेवा लूट ली, वे धन्य बने... प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. कांतिकाका ने गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदयगत अभिप्राय को जान कर ताड़देव की धरती से जिस आत्मीयता की गंगोत्री को 'गुणातीत परिवार– योगी परिवार' के रूप में प्रवाहित किया था और केवल उपदेश से नहीं, बल्कि अपने जीवन की प्रत्येक क्षण उसी के मुताबिक जीकर बताया था, उसका प.पू. स्वामिजी ने देश-विदेश में वाकई डंका बजा दिया... धन्यवाद-धन्यवाद प.पू. स्वामिजी को और उनके वचन से याहोम होने वाले संतों, युवकों, बहनों एवं गृहस्थों के आत्मीय समाज को!

✡✡✡

'श्री अक्षरपुरुषोत्तम के आश्रितों की वसंतपंचमी!'

शीर्षक पढ़ कर शायद आश्चर्य हो कि श्री अक्षरपुरुषोत्तम के आश्रितों की वसंतपंचमी यानि क्या? वसंतपंचमी का मंगलकारी दिन स्वामिनारायण के आश्रितों के लिए तो करुणानिधि श्रीजी महाराज की असीम अनुकंपा का दिन! आज के दिन भगवान स्वामिनारायण ने ***'न मे भक्तः प्रणश्यति'*** यानि – 'मेरे भक्त का नाश नहीं होगा' – ऐसी उद्दात भावना से अपने सेवकों के लिए अभयदान के रूप में

आचरण अमृत **'शिक्षापत्री'** का ग्रंथ रचा और घर-घर **'सुदर्शन चक्र'** रख दिया!

भगवान श्री कृष्ण ने अपने भक्तों की रक्षा हेतु स्वयं एक 'सुदर्शन चक्र' धारा; जबकि श्रीजी महाराज ने तो अपने आश्रितों की रक्षा हेतु 'शिक्षापत्री' के रूप में मानो घरोघर 'सुदर्शन चक्र' घूमते कर दिए।

शिक्षापत्री के इन **२१२** श्लोकों की परिधि में जो आश्रित जीवन जीते रहेंगे – वर्तेंगे, उन्हें कोई लौकिक-पारलौकिक दु:ख कभी भी बाधारूप नहीं हो सकता। इससे भी अधिक शिक्षापत्री का अनुसरण करने वाले मुमुक्षु की पंचविषयों के प्रति की प्रीति अपने आप ही विलीन होकर प्रभु के साथ की दृढ़ प्रीति में पलट जाएगी, ऐसा आश्वासन भी मिल गया है!

भले ही आचार, व्यवहार और प्रायश्चित के मार्गदर्शन युक्त यह पुस्तिका छोटी-सी है, किन्तु ऐसी संक्षिप्त और संपूर्ण, फिर भी सचोट पुस्तिका पहले या बाद में कभी लिखी नहीं गई। यूं, भगवान स्वामिनारायण की त्रिकालभेदी पारदर्शकता शिक्षापत्री द्वारा सनातन सत्य स्वरूप बनी है...

दूसरी ओर – **वसंतपंचमी** तो मानो अक्षरपुरुषोत्तम संस्था का ही प्राकट्य पर्व! जब **श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के आद्य प्रवर्तक गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का पृथ्वी पर प्रगटीकरण हुआ।** हिन्दु धर्म में भक्त सहित भगवान की युगल उपासना के रूप में लक्ष्मी-नारायण, शंकर-पार्वती, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-शक्ति अवतारों की आराधना होती रही है। लेकिन, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज यदि धरातल पर पधारे ना होते, तो भक्त सहित भगवान की इस नई युगल उपासना के मर्म को कोई समझ नहीं पाता। श्रीजी महाराज और गुणातीतानंदस्वामिजी के धरती पर पधारने के बावजूद भी ब्रह्म-परब्रह्म की शुद्ध उपासना यानि कि गुणातीत संत द्वारा ब्रह्मभाव को पाकर पुरुषोत्तम नारायण की – परब्रह्म की भक्ति करने का मार्ग सभी के लिए दुर्लभ बन गया होता! श्री अक्षरपुरुषोत्तम की प्रगट की उपासना सभी के लिए ऐसी सुलभ, साकार और मूर्तिमान नहीं बनी होती! यूं, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की पहचान तो गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने करवाई और... स्वतंत्र रूप से भगवान को धार पाना संभव हो सका। भक्तसहित भगवान की उपासना करने की सूझ-समझ भी उन्होंने दी। जैसे हनुमानजी और सीताजी की आराधना करेंगे, तो रामजी की महिमा समझ पाएंगे। राधाजी की आराधना करेंगे, तो श्री कृष्ण की महिमा समझ पाएंगे। इसी प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने खूब दृढ़ता से कहा कि –

गुणातीत स्वरूप की यदि आराधना करेंगे, तो ही श्रीजी महाराज के स्वरूप की यथार्थ पहचान हो पाएगी और 'गुणातीत ज्ञान' वर्तन में ला पाएंगे।

और... 'गुणातीत ज्ञान की परम सिद्धि' यानि – गुरु के साथ का अद्वैतभाव! जैसे समर्थ गुरु, वैसे ही समर्थ शिष्य! सच, वसंतपंचमी के शुभ दिन प्रादुर्भाव को पाए शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्ता कर सत्संग में वसंत ला दी।

हाँलाकि, यह कार्य करने में उन्हें कई विरोधों का सामना करना पड़ा, लेकिन फिर भी वे अपनी निष्ठा में अडिग ही रहे। भगतजी महाराज और जागास्वामी के ज्ञान को खुद पचाया और साथ ही अक्षर और पुरुषोत्तम के मूर्त स्वरूपों को मध्य मंदिर में पधरा कर सर्वोपरि युगल उपासना को व्यापक में फैलाने में पीछे हठ नहीं करी।

एक बार **कोठारी गोवर्धनभाई** ने गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज को कहा –

'आप जहाँ-जहाँ जाते हो, वहाँ बड़ा उत्सव हो जाता है और आपकी ओर कई लोग खींचे जाते हैं। अतः त्यागीओं में खूब राग-द्वेष भड़क उठा है... आपको

जड़ से उखाड़ने के लिए वे तैयार बैठे हैं; इससे मुझे उदासी और बैचेनी रहती है। त्यागीओं की ओर से आपको खूब परेशानी आएगी ऐसा मुझे लगता है।'

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने तुरंत कहा –

''हम किसी क्रिया के मालिक बनेंगे, तो उसका बोझ हम पर रहेगा। 'कर्ता-हर्ता श्रीजी महाराज हैं' – यूं समझेंगे तो श्रीजी हम पर आंच भी नहीं आने देंगे। फिर भी, यदि दुःख आएगा, तो श्रीजी महाराज हमें कसनी में लेकर शुद्ध कंचन (सोने) जैसा कर देंगे। लेकिन इस कारण आती परेशानी देख कर डरना नहीं है।''

सो, **दि. ३१ जनवरी – वसंतपंचमी** के इस पावन पर्व पर यही प्रार्थना कि हमें जब बख्शिश में ऐसा संबंध मिला है, तो गफलत में इसे गवाँए नहीं और मानवजीवन के अंतिम ध्येय पर-लक्ष्य पर पहुँच कर प्रगट प्रभु की मूर्ति सिद्ध कर लें!

✡✡✡

आध्यात्मिक समाज के क्रांतिकारी युगपुरुष के साक्षात्कार दिन पर...

हम सभी जानते हैं कि **वर्ष के दूसरे महीने की ३ तारीख** समग्र गुणातीत समाज के लिए अद्‌भुत आनंदमय है... इस दिन **१९५२ में गुरुहरि योगीजी महाराज ने** मानो अपने **प्रिय पात्र** दिव्य मानसपुत्र ब्रह्मस्वरूप – **काकाजी महाराज को अक्षरमंदिर, गोंडल में ७२ घंटे की समाधि** करवाते हुए अपने स्वरूप की अनुभूति **करवा कर अक्षरधाम के सच्चे सुख की प्रतीति करवाई** – साक्षात्कार करवाया और इसी दिन से प्रकृति-पुरुष से पर के दिव्य जीवन में अखंड रहने की सच्ची विजययात्रा शुरु हुई! प्रगट स्वरूप को पहचानने का ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने सत्संग में उद्‌घोष किया।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने कृपा करके लींबडी गाँव में संतों-मुक्तों के पास इसी बात की निम्न प्रकार पुष्टि भी करी थी –

'क्या शोला देखना, सिद्धाई देखनी या प्रकाश हो उसे सच्चा साक्षात्कार मानते हो? जो धाम में हैं वे ही मुझे इस स्वरुप के द्वारा साक्षात् मिले हैं, ऐसा अपरोक्ष ज्ञान जीव में माना जाए और सारा सत्संग दिव्य माना जाए – जहाँ किसी प्रकार से कोई भेदभाव न रहे – फर्क ना हो और अल्प संबंध वाले को भी ब्रह्म की मूर्तिरुप देखे और जाने – वही सच्चा साक्षात्कार है!'

हाँलाकि, जिनकी प्रत्येक क्षण गुरुमय बीतती हो – गुरु से पृथक ना हो, ऐसे ब्रह्मस्वरूप काकाजी को इस दिव्य अनुभूति की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन मुमुक्षुजन इसी विभूति को (प.पू. काकाजी को) पहचान कर उनका अनुपम लाभ ले सकें, इस हेतु महाराज और स्वामी ने ही मानो ऐसी दिव्य लीला का दर्शन सभी को करवाया।

यूं धाम की रीति, नीति और स्थिति एवं निश्चयात्मक मंगलकारी अवस्था की स्पष्टता करवा कर, **गुरुहरि योगीजी महाराज ने ३ फरवरी को सभी श्रेयार्थियों के लिए निर्दोषबुद्धि का-स्वरूप के सम्यक् ज्ञान का या ज्ञानसमाधि का राजमार्ग खोल दिया** और... अपनी कल्याण योजना में सर्वथा समर्पित होने का प.पू. काकाजी को आदेश भी दिया!

गुरुहरि योगीजी महाराज का यह आदेश झेलने में भले कैसे ही विरोध हुए, लेकिन **प.पू. काकाजी की शूरवीरता के कारण –**

'मत-असहिष्णुता' से पूर्णतया बाहर निकल कर, भेददृष्टि से परे की आत्मीयता का दर्शन कराते हुए सिर्फ 'तू ही' 'तू ही' करते हुए, 'आप स्वामी-मैं

सेवक'–ऐसे **सच्चे सेवकभाव से जीते संतों, व्रतधारी युवकों, भगवान भजती बहनों और जनक-अंबरिष जैसे गृहस्थों का एक दिव्य गुणातीत समाज आज देश-विदेश में अस्तित्व में आया है।** यदि हम यह कहें कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी यानि– गुणातीत समाज के सिर्फ सर्जक ही नहीं, बल्कि रक्षाकवच भी थे** – तो, यह तथ्य अनुचित नहीं होगा। आज हम–**चाहे पवई, दिल्ली, हरिधाम, गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन, सांकरदा, समढियाळा, शिकागो से जुड़े** हों–वे **सभी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा स्थापित गुणातीत समाज में, गुणातीत स्वरूपों की गोद पाकर अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं।**

सो, ऐसी करूणानिधि विभूति ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन पर यही प्रार्थना करनी है कि आपने जिस आत्मीयता का डंका बजाया, उस पर अग्रसर रहें और... इसी निमित्त **१९९२ में ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज द्वारा दिए ३ फरवरी के आशीर्वाद** हम केवल पढ़े ही नहीं, बल्कि अपने किसी अभिनिवेश में – निजी महत्त्वाकांक्षा के आतंक की जकड़ में आपको भूल कर बड़प्पन पाने के लिए गली-गलियारों में ना घूमते रह कर, आपके द्वारा इंगित सच्ची आत्मीयता के राजमार्ग पर चल पड़ने अब देरी ना करें!

गुणातीत समाज की जय
मुक्ताक्षरपुरुषोत्तम की जय
सदा दिव्य साकार ***ब्रह्मस्वरूप काकाजी का स्वरूपानुभूति दिन ३ फरवरी****।*
आज समग्र गुणातीत समाज के लिए आध्यात्मिक नूतन वर्ष का दिन है।
हम सभी को इस दिन योगीजी महाराज और काकाजी ने सनाथ बनाया
और इस दिन से
काकाजी २४ घंटे योगीजी महाराज के यथार्थ स्वरूप की पहचान करवाने
जोर-शोर से तन-मन-धन और सर्वस्व का समर्पण करके लग पड़े।
काकाजी को साक्षात्कार हुआ और उन्होंने जोर-शोर से प्रतिपादन किया कि–
'ये जोगी महाराज साक्षात् महाराज का ही प्रगट स्वरूप हैं
और
वह मैं साक्षात् धाम में मेरी आँखों से देख कर आया हूँ।
उनकी प्रसन्नता पाओगे, तभी अक्षरधाम की प्राप्ति होगी।'
काकाजी को यदि साक्षात्कार नहीं करवाया होता,
तो–
योगीजी महाराज एक अवतार जितने ही - अरे! एक सामान्य साधु के रूप में ही पहचाने जाते
और अभी जो हम – लोक, भोग, देह और पक्ष से परे होकर निरंतर अक्षरधाम की ज्ञानसमाधि में रहते हुए हैं
और अक्षरधाम में ही निरंतर बैठे हुए
तनिक भी दुःख के बिना का जो सुख, शांति, आनंद भोग रहे हैं, वह ले नहीं पाते।
सामान्य सत्संगी होकर जी रहे होते।

*इसलिए, **हम आज काकाश्री का ऋण अदा करने इकट्ठे हुए हैं।***

तो, काकाश्री का वचन यथार्थ पाल कर-मनन द्वारा संग करके

उनके अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करने

और

अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद सहज भोगते रहें

ऐसा गुरुमुखी जीवन जीने का बुद्धियोग

एवं

अच्छे साधु का संग प्रभु सभी को बख़्शें, ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद।

पप्पा के जय स्वामिनारायण!

३.२.९२

✡✡✡

योगी सर्जन – प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रागट्य पर्व पर...

१५ फरवरी – गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसन्नता के पात्र और उन्हीं के द्वारा सर्जित **माहात्म्य सम्राट प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्रागट्य दिन!** १९३६ की १५ फरवरी यानि – महा कृष्ण, ९। रविवार को प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी – 'रमेशभाई' ने गुजरात के धर्मज गाँव में जन्म लिया। कहावत है पूत के पैर पालने में ही नज़र आ जाते हैं। इसी प्रकार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने जिनके यहाँ जन्म लिया, वे तो स्वयं ही गुरुहरि योगीजी महाराज के मानो निजी पात्र! वे और कोई नहीं, बल्कि हम सभी के सिरछत्र बने **गुरुहरि पप्पाजी**!

ऐसे घर में जन्म होना ही मानो श्रीजी महाराज द्वारा पूर्व नियोजित था, जो कि निम्न प्रसंगों से स्पष्ट ख्याल आएगा –

हम सभी जानते हैं कि प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के पिताश्री डॉ. नाथाभाई ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के अनन्य शिष्य थे एवं माता सौ. कमलाबेन की दादी हरिबा भी शास्त्रीजी महाराज की अनन्य शिष्या थीं। यूं, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को दोनों पक्ष से भगवान श्री स्वामिनारायण का आश्रय ही वारसे में मिला।

एक बार ७ वर्ष की आयु में रमेशभाई के रूप में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को नड़ियाद स्टेशन पर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के आशीर्वाद दिलवाने उनकी दादी सौ. कमलाबेन को साथ लेकर गए। तब **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने** रमेशभाई को आशीर्वाद दिए कि –

'तेरे बाप से मुझे बहुत काम लेना है और तुझे साधु बना कर तुझ से बहुत सेवा करवानी है।'

यूं बोल कर रमेशभाई को धब्बा मारते हुए मार्मिक दृष्टि से साथ में खड़े योगीजी महाराज को देखा। गुरुहरि योगीजी महाराज ने सेवकभाव से हाथ जोड़ते हुए दूर से रमेशभाई पर 'कृपादृष्टि' कर दी।

दरअसल गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज ने तो पूर्व के भवदर्शन करके ही उन्हें ये आशीर्वाद दिए थे; क्योंकि बाद में युवक रमेशभाई का माहात्म्य गुरुहरि योगीजी महाराज कई बार अन्य युवकों में गाते कि –

'यह रमेश सामान्य नहीं है। स्वरूपानंदस्वामी का अवतार है।'

और... इस बात की साक्षी उनके बालचरित्र देते भी हैं –

पू. मम्मीजी के साथ रमेशभाई गोंडल, जूनागढ़, सारंगपुर इत्यादि मंदिरों की यात्रा करने गए थे। वहाँ से लौटने के बाद रोज पू. मम्मीजी 'चेष्टा' बोलते, तो रमेशभाई सोते-सोते उसे सुर में गाते। बीच-बीच में बोलते –

'मम्मी, शास्त्रीजी महाराज पधारे हैं... देखो, गोंडल देरी में योगीजी महाराज प्रदक्षिणा कर रहे हैं। अहाहा... सारंगपुर के हरिकृष्ण महाराज ने कितनी अच्छी पोशाक पहनी है...'

पू. मम्मीजी सुनते रहते और हँसते हुए कहते–

'तू तो स्वरूपानंदस्वामी का अवतार है, ऐसा साराभाई कहते थे, इसलिए तुझे दिखाई देता है... मुझे नहीं दिखाई देता।'

यह भी सांकेतिक है कि १९६१ में वसंतपंचमी यानि–'शिक्षापत्री जयंती' एवं 'गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रागट्य दिन के शुभ दिन' ही गुरुहरि योगीजी महाराज ने अटलादरा में उन्हें पार्षदी दीक्षा दी... तत्पश्चात् उसी वर्ष पढ़े-लिखे इक्यावन युवकों के साथ गुरुहरि योगीजी महाराज के प्राकट्य दिन पर गढडा के नए मंदिर की कलशविधि के उत्सव पर उन्होंने भागवती दीक्षा प्राप्त करी और गुरुहरि योगीजी महाराज के अभिप्राय के यज्ञ में जीवन याहोम कर दिया।

साथ ही, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करके गुणातीत स्थिति प्राप्त करने के गुरुहरि योगीजी महाराज के हार्द को भी प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के समागम से उन्होंने समझा और... सिर्फ गुरुहरि योगीजी महाराज के सिद्धांत की ओर ही नज़र रखते हुए निर्दोषबुद्धि और माहात्म्ययुक्त सेवा को ही जीवन का आधार माना। खुद तो जंगम मंदिर बने ही और... ऐसा सिंचन करने का कार्य उन्होंने अपने आश्रितों में भी किया। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की ऐसी सेवा पर मानो मोहर लगाते हुए **प.पू. काकाजी** ने तो १५ फरवरी १९८६ यानि – खुद के शरीर छोड़ने से २० दिन पूर्व प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सांकरदा में ही कहा था –

''...अक्षरविहारीस्वामी की निर्दोषबुद्धि बहुत जबरदस्त और सहज स्वाभाविक जीवन।
निर्दोषबुद्धि का एक ही नियम है–
किसी का (स्वभाव-प्रकृति-दोष... कुछ भी)
देखा नहीं और हँसते ही रहे।
साक्षीभाव में रहे।
सत्त्वगुणी भी दिव्य, रजोगुणी भी दिव्य।
क्योंकि सर्वोपरि स्वरूप भी दिव्य!
सो, खुद भी दिव्य हो गए।
थईने साव निराधार (होकर बिल्कुल निराधार)
जईने मनने पेले पार (मन से परे होकर)
करीए तुजने पोकार (करें तुम्हें पुकार)
तो तुं सांभळे तत्काळ (तो आप तुरंत सुनते हो।)
नहीं तो आने वाली कल को...
इसमें कोई महोब्बत नहीं।
यह बात स्वामी ने सिद्ध करी है।
अक्षरविहारीस्वामी बहुत निर्मानी हैं
और
ब्रह्म का गुण है – 'अमानित्वम्'।''

हम सभी के लिए यह सौभाग्य की बात है कि वही **स्वरूपानंदस्वामी के अवतार परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी** पिछले तीन-चार साल से लगातार मार्च के महीने में प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव पर उत्तरभारत के मुक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देने आते ही रहते हैं। पिछले वर्ष ३० मार्च '०८ की प्रातः सभा में तो उन्होंने निम्न आशीर्वाद भी दिए –

'...आज आप सबके लिए प्रार्थना करता हूँ कि आप सब अक्षरधाम में ही बैठे हुए हैं और अक्षरधाम में ही रहेंगे...'

यूं, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने हमें अक्षरधाम में सदैव रहने के आशीर्वाद दिए–प्रार्थना तो करी; लेकिन अब हम सभी की फर्ज है कि हम उनके आशीर्वाद झेल लें।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि–
सत्संग में हमें हुं (मैं), मारो गगो (मेरा लड़का) ने मारी गगी (मेरी लड़की) – यानि केवल अपने परिवार तक में आत्मबुद्धि व प्रीति सीमित नहीं रखनी है, वरन् समग्र गुणातीत समाज मेरा अपना परिवार है – मेरा जन्म ही इन सत्संगीओं के बीच हुआ है, यूं दिल की सच्चाई से मान कर सत्संग में ओत-प्रोत होना है!

सो, हम अपनी मान्यता और स्वभावों के दायरों में जकड़े रह कर ऐसे आशीर्वाद गवाँएं नहीं–यही प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रागट्य दिन पर याचना!

✡✡✡

३० मार्च '०८ सायं–प.पू. गुरुजी का ७१वां प्राकट्योत्सव

प.भ. रामजीभाई मवाणी (राजकोट)

...*'हम हैं बड़े किस्मत वाले, हमको मिले हैं गुरुजी निराले'* – इस भजन में बहुत सी बात आ गई हैं। **आज हमारे लिए एक बड़ा दिन है। इसलिए कि आज हम ऐसे संत, जिसने हमें विकट परिस्थिति में एक दिशा दी है, ऐसे गुरुजी आज ७१ एकहत्तर वर्ष पूरे कर रहे हैं। हम सब प्रार्थना करें कि १०० साल तक वे हमें मार्गदर्शन, सेवा, प्रेरणा, प्रोत्साहन – ये सब देते रहें। आपके द्वारा जो राह बताई गई है, उससे हम सब संतुष्ट हैं... इधर आते हैं, तो गुरुजी के सान्निध्य के अलावा – 'स्वामिनारायण' के अलावा हम सब भूल जाते हैं। इट्स वेरी पावरफुल सॅटीस्फेक्शन और हमें ये सॅटीस्फेक्शन गुरुजी ने दिया है। हमारे लिए गुरुजी एक स्नेह का सागर हैं।**

गुजराती में बोलते हैं – *'मानवी केटलुं जीव्यो ए अगत्यनुं नथी, केवुं जीव्यो ए अगत्यनुं छे'*
अर्थात् हम कितना जीते हैं, वो इम्पोर्टन्ट नहीं है, बल्कि हम कैसे जीते हैं – वो बड़ी चीज है। वो हमारी पूँजी-एसेट है, जो लोग याद करेंगे।

गुरुजी ७१ साल के हुए, वो हमारे लिए जीए हैं... हरिप्रसादस्वामिजी भी मुझे प्रेरणादायी रहे हैं। **आज सब संत जो जीते हैं, वो एग्ज़ाम्पल हैं।** हम संत नहीं बन सकेंगे। हम संसारी हैं, लेकिन संत के दिए आदर्श पर हम रहेंगे, वो बहुत बड़ी चीज है। **ऐसे संत का बताया हुआ रास्ता, शांति का रास्ता है – हमारी समृद्धि का रास्ता है।** आज इस मंच पर आते हुए मुझे आनंद है – ख़ुशी है। मैं चालीस – पैंतालीस साल पुरानी बात करता हूँ। मैं 'धोराजी' तालुका के एक वीलेज में रहता था। स्टूडन्ट लीडर था, एडवोकेट बना। उस वक्त **मैं कार्लमार्क्स के सिद्धान्त में मानता था।** कार्लमार्क्स क्या चीज थी, वो हम जानते हैं। कार्लमार्क्स बोलते थे कि धर्म इज़ नथींग, धर्म में कुछ नहीं है। मैं स्टूडन्ट मुवमेन्ट के बहुत बड़े – जोरदार कम्यूनिस्ट मूवमेन्ट में रहता था। तब हरिप्रसादस्वामिजी, कनुभाई बावरिया के साथ 'धोराजी' में हम सब को पाठ पढ़ाने आते थे। एक छोटी-सी गाड़ी एम्बेसॅडर में स्वामिजी 'धोराजी' आते थे। हम सबको इतना पाठ पढ़ाया कि मैं **कार्लमार्क्स भूल कर हरिप्रसादस्वामी को याद रखने लगा।** और आज ये सब जगह देख कर लगता है, **कार्लमार्क्स से भी कोई शक्तिशाली है, तो वो ये संत हैं...** जब मैंने इनकी कंठी ली, तब भी स्वामिजी अकेले घूमते थे।

नॉन ए.सी. गाड़ी थी, खाने -पीने की कुछ परवाह नहीं थी। आज इनके प्रिसिंपल्स से – इनके आदर्श से – इनके सिद्धान्त से और इन्होंने समाज को जो दिया, इसलिए समाज आज इनके साथ है और हम सब इनके साथ हैं।

तो, ऐसे आदर्श और ऐसे संत हमारे साथ बैठे हुए हैं। मुझे खुशी है कि आज हम सब इस जगह पर आए हैं। वह इन संतों की बड़ी मेहरबानी है और ऐसे संत हमारे साथ हैं... **इस पंथ में एक नया सिद्धांत महिलाओं का है।** हम सब बोलते हैं कि संसार में और धर्म में महिला सहयोगी है; हमारी अर्धांगिनी है, बहन है, माता है। **अनेक विकट समस्याओं में खूब परिश्रम करके बहनों को यहाँ स्थान दिया है।** मुकुंदजीवनस्वामिजी – गुरुजी ने भी इधर बहनों के लिए अच्छा-सा स्थान बनाया है, जो देख कर मुझे बहुत खुशी हुई है और इसी वजह से मैं यहाँ जुड़ा हुआ हूँ...

...जब भी गुरुजी गुजरात में आते हैं, तब मैं अमदावाद जाता हूँ। **हर महीने मैं दिल्ली भी आता रहता हूँ। महीने में दो-तीन बार आना पड़ता है। आप सबकी जेब में अभी जो मोबाइल है, थोड़ी देर के बाद उसकी बैटरी डाउन हो जाएगी। आपको चार्जर ढूंढना पड़ता है। १०-१५ दिन में मेरी भी मानसिक बैटरी डाऊन हो जाती है और मेरी बैटरी मुकुंदजीवनस्वामी चार्ज करते हैं। इसलिए मुझे मेरी बैटरी चार्ज करने के लिए गुरुजी के पास बार-बार आना पड़ता है, इट्स माई पावर।**

ऐसे संतों के सान्निध्य में हम जीवनपर्यंत रहें – यही मेरी प्रार्थना है और मैं दोनों गुरुजी को प्रार्थना करता हूँ कि आप हमें ऐसे राह पर सद्बुद्धि दीजिये कि हम कभी भी जीवन में इस रास्ते से विचलित न हो और इस रास्ते पर देश, समाज और आपकी सेवा करते रहें।

प.भ. मल्कानी अंकल (दिल्ली)

सहजानंदस्वामी महाराज की जय हो!

With prayers to My Master Guruhari Pappaji, I convey my greetings and heartiest Jay Swaminarayan to His Holy Excellency P.P. Swamiji, P.P. Aksharvihariswami, P.P. Saheb, P.P. Bharatbhai and all dignitaries on the dias and also my greetings to all the holy sisters and to all the holy saints. First of all, I have to congratulate P.P. Guruji for His birthday. कल से सुन रहा हूँ कि गुरुजी के ७१ साल के हो गए। पर, एक्चुवली मेरा पर्सनल एक फीलिंग कहो, ओपिनियन कहो, थिंकिंग कहो,पर्सपॅक्टीव कहो तो मेरे को तो गुरुजी रोज जो हैं, वो थोड़ा यंगर दिखाई देते हैं। हो सकता है मुझे बहुत प्रेम है, इस वजह से मुझे वो छोटे होते हुए - उम्र में छोटे हुए नज़र आते हैं। पर यहां बहुत सारे बैठे हुए हैं जो गुरुजी से इतना प्रेम करते हैं - इतना प्रेम करते हैं, मेरे ख्याल से उनको गुरुजी में बचपन ही नज़र आता है। गुरुजी ने, हमेशा – हमेशा जितना समाज ने उनको प्रेम दिया है, उससे कहीं गुणा ज्यादा गुरुजी ने प्रेम से सारे समाज को रखा है। आज ये गुरुजी की कैसेट 'मार्गदर्शिका' का इनॉग्युरेशन हो रहा है। मैं इसके विषय में थोड़ा अंग्रेजी में बोलूंगा।

This CD is a work of a lifetime. A lifetime of dedication – dedication to God, Guru and the samaj at large. We all know, rather well, that Guruji has been a

dedicated follower of His Divinity Kakaji, but at the same time He has had immense love, gratitude, regard and respect for all the Swaroops–Swamiji, Saheb, Aksharvihariswamiji and of course he has always had great love for His Holiness Pappaji. What does it show us? I am sure that on this path of spirituality, Guruji must have faced a lot of problems. But what are we going to learn from this? That we must be as steadfast in our determination and our goal. Guruji's goal has been clear from 'day one'. So many times He has said very openly – He has not been of a very serving kind, but He has been one full of faith – full of faith for His Master and the Swaroops. He has clung and attached Himself to the words of Kakaji and that has seen him through the entire passage of his spiritual life. What will this CD and these pravachans bring to us? Actually they are a path to redemption, call it Salvation, call it happiness. We can all, assuredly follow His example, follow His conveyance of His spiritual inner secrets and achieve that for which we have come into life – for our Goal, i.e redemption and freedom. I must thank Guruji for all His work and giving us all the secrets of spiritual life. We all need happiness, we all look forward to happiness. We come to Guruji, we come to Swamiji, Saheb, and other Swaroops with only one aim in mind & that is to get happiness. Everyone has a different approach to happiness and everyone has a different type of happiness that they desire. But when we come here in the fold of these Supremely Realised Saints, then one has to realize that the final destination is only one and that is redemption and freedom. Guruji has achieved all this through faithfully following His Master and surrendering Himself to his Master's words. I thank you all for being present today. I thank all the swaroops and dignitaries and above all I wish to convey my heartfelt sincere love for Guruji and thank Him for this great conveyance of spiritual life to all of us.

Thank you and Jay Swaminarayan.

प.पू. शांतिभाई (ब्रह्मज्योति)

...अमरवेद उपनिषद् में सद्‌गुरु का जो वर्णन किया है, ऐसे गुणातीत सत्पुरुष पृथ्वी पर हमेशा रहेंगे और हमारा कल्याण करेंगे – ये बात स्वामिनारायण भगवान ने बताई। आज गुरुदेव योगीजी महाराज की कृपा से ऐसे दिव्य पुरुष हमारे पास प्रगट हैं। हमारा उनके साथ संबंध है–जो गुणातीत हैं। वो भक्त का स्वीकार करते हैं, उनका परिवर्तन करते हैं।

आज वशीभाई ने जो बताया अन्य सब ने जो बताया – वो परिवर्तन की बात है। **गुरुजी ने यहां ४० साल की जो तपस्या की, तो सारा समाज प्रगट हुआ है। ये परिवर्तन है, आंतरिक परिवर्तन है, आत्म शुद्धि होती है, देहभाव से पर होते हैं।** भगवान हमेशा रहें, ऐसा वो मंदिर बनाते हैं। वे गुणातीत पुरुष हैं। ये

गुरुजी, गुणातीत पुरुष के रूप में आज हम सबके हृदय में स्थापित हुए हैं-बैठे हैं। उन्होंने भी साधना की है, उन्होंने भी गुरु आज्ञा – काकाजी की आज्ञा अक्षरशः – जो उन्होंने कहा, वो करा। योगीजी महाराज ने जब कहा कि आपको दीक्षा देनी है, तो दीक्षा ली। योगी बापा को मालूम था कि उनके एक संकल्प से अंदर से सब शुद्ध हो जायेगा। शुरुआत से काकाजी के साथ; पप्पाजी के साथ उनका संबंध अनोखा था। साधना में जो कुछ भी गड़बड़ हुई, कोई विचार आया, तो बिल्कुल प्रेम से अपने पिता के पास वो कह सके, वैसा संबंध था। **साधना में ऐसे सत्पुरुष के साथ, ऐसा संबंध होना अनिवार्य है।** मन नहीं चलाना, बुद्धि भी बिल्कुल नहीं चलानी। चारों ओर – चारों दिशाओं में हमारी बुद्धि दौड़ती है, तो दौड़ने दो; लेकिन ऐसे दिव्यपुरुष, जिनका हमने स्वीकार किया, उनके चरणों में बुद्धि समर्पित कर देनी है। गुरुजी ने ये किया, तो आज हम सब का जतन कर रहे हैं। देखभाल करते हैं; शारीरिक – दैहिक देखभाल तो करते ही हैं – आपने खाया ? कहां गये थे ? सब पूछते हैं। यदि कोई बीमारी आ गई, तो भी देखभाल करते हैं; हमारे लिए प्रार्थना करते हैं। आत्मा की देखभाल बहुत ज्यादा करते हैं।

ऐसे दिव्य पुरुष का जब संबंध होता है, उनके साथ पूरा लगाव हो जाता है और ऐसे दिव्य पुरुष जब हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, तो ही हमारे स्वभाव टलते हैं। वैसे तो श्रीजी महाराज ने बोला है कि–

'जो हमारा है – मेरा है, जो मुझे मानता है – उनमें तिलमात्र कसर नहीं रखनी है।'

ये जो भगवान स्वामिनारायण ने बताया, वही रास्ता ये गुणातीत पुरुषों ने भी स्वीकार किया है। उनके साथ हमारा लगाव-संबंध संपूर्ण हो जाता है, तो वो भी हमारा स्वीकार करके हमारी सब कसर टालते हैं, सब स्वभाव निकाल देते हैं, हमारी वासना छुड़ा देते हैं। ऐसे दिव्य पुरुष की हमें प्राप्ति हुई है। जिसका जितना संबंध उनके साथ बढ़ेगा – पक्का होगा, वैसे हमारे अंदर के सब स्वभाव निकल जाएंगे, हम शुद्ध हो जायेंगे। भगवान हमारे हृदय में हमेशा निवास करेंगे, ऐसा हमारा मन मंदिर बना देंगे। ये तो जंगम तीर्थ हैं। इनके पास जो जाते हैं, वो **जितनी जिसकी अपनी शक्ति – इतना उनके पास से ले सकते हैं।**

तो आज प्रार्थना ये करनी है कि गुरुजी आप दयालु हैं, आप हमेशा कृपा करते हैं, बहुत भक्त जो आपको मानते हैं, काकाजी को मानते हैं, पप्पाजी को मानते हैं, योगीजी महाराज को मानते हैं, भगवान स्वामिनारायण को मानते हैं, स्वामिनारायण का जिनके साथ संबंध है, इनका संबंध देख के आप सब बर्ताव करते हो; गुणातीत पुरुष की जो लाक्षणिकता होती है - जो सब गुण होते हैं, ये गुण आपने धारण किए हुए हैं। **योगीजी महाराज** कहते थे –***'हमारा तो सेवक धर्म है, गुरु धर्म नहीं है।'***

कल शाम को सभा में **गुरुजी ने जो** अपनी **बात बताई, हृदयस्पर्शी थी। काकाजी ने एक बार बोला कि–ये दोनों (प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) तुम्हारे गवर्नर्स हैं, उनका रिस्पेक्ट करो। आज भी काकाजी के एक वाक्य को लेकर वे हमेशा जीते हैं। ये गुणातीतभाव उन्होंने प्राप्त किया है। इसके लिए उन्होंने बड़ी साधना की है। ऐसे-ऐसे जो काकाजी ने, पप्पाजी ने–जो कोई उनको सेन्टेन्सीस दिए हैं-वाक्य दिये हैं, उनका अनुसरण किया है।** तो प्राप्ति भी ऐसी ही हुई है।

हम ये प्रार्थना करते हैं कि– हमारा लगाव आपके साथ ऐसा दृढ़ हो जाए। गुणातीत स्वरूपों के साथ भी हमारा लगाव ऐसा दृढ़ हो जाए कि उनका जो वचन है, ये वचन ही हमारा लक्ष्य बने और हमारी साधना पूर्ण हो, तब तक हम चलते रहें–ऐसा आप आशीर्वाद देना। आज स्वामिजी पधारे हुए हैं, साहेबजी हैं, अक्षरविहारीस्वामिजी हैं, गुरुजी – आप हैं, भरतभाई हैं, वशीभाई हैं; ऐसे दिव्य पुरुषों की उपस्थिति में हम यही प्रार्थना करते हैं कि हमारा जीवन भी ऐसा गुरुमुखी बने; हमेशा उनकी प्रसन्नता के लिए हमारा जीवन बना रहे–ऐसी कृपा बरसाओ। जय स्वामिनारायण।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी (सांकरदा)

...सभी वक्ताओं ने अपने अनुभव बता कर एहसास करा दिया कि **काकाजी ने अनहद् कृपा से गुरुजी को यहाँ दिल्ली भेजा** और जैसे वशीभाई ने बताया कि **चालीस साल की तपस्या के बाद आज हम सब ये उत्सव का आनंद मना रहे हैं।**

एक बार पप्पाजी सांकरदा पधारे थे; तब पप्पाजी ने संतों को उपदेश देते हुए कहा कि आप सब अलग-अलग गांव में विचरण करते हैं, वहां से आपको लोगों का जो आदर - सत्कार मिलता है, वो आपकी मेहनत का फल है – ऐसा मत मानिए। ये सब शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की तपस्या का फल है, जो हमें मिल रहा है। इसी तरह हम देखते हैं कि **गुरुजी सब काम करते हैं, मगर ये काकाजी, पप्पाजी, कान्तिकाका, सोनाबा और ये दिव्य बहनों – इन सबका जो तप है, इन्होंने जो भीड़ा सहन किया है, उसी का फल हम सभी चख रहे हैं। गुरुजी की ये कृपा है कि उन्होंने यह काम किया है, अभी भी करते रहते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे, मगर ये अपने जो प्राण पुरुष हैं उनकी देन है...**

ये स्वरूप जो हमारे जीवन में काम करते हैं, उसका हम कोई मूल्य नहीं चुका सकते। फिर भी जैसे काकाजी बोलते थे कि ये तो हमारी हाथी – खरगोश जैसी दोस्ती है। और... खरगोश हाथी को कैसे अपने यहाँ बुला के खाना खिला सके? ऐसे हम सबके हालात है। **गुरुजी ने जो कुछ भी किया है, वो काकाजी ने उनके जीवन में जो किया, उसका ऋण अदा करने के लिए! उनकी भक्ति करने के लिए!** उनकी सेवा करने के लिए सब किया है! **जिसका फल हमें मिल रहा है। मगर** मैं मानता हूँ कि हम लोगों ने जो बात की है, वो आख़िरी बात नहीं है। **धीस इझ नॉट अल्टीमेट गोल। काकाजी** जब भी सांकरदा आते थे, संतों को बात करते थे; वे **बोलते थे कि योगीजी महाराज ने आपको जो दीक्षा दी है, वो केवल सुखी होने के लिए नहीं है, अक्षरधाम की प्राप्ति करने के लिए नहीं है, मगर उनका वारिसदार बनने के लिए है। योगीजी महाराज ने** ऐसा **आशीर्वाद दिया था** कि –

आप साधु हो जाओ, पात्र भी हम बनाएंगे और उसमें ब्रह्मरस भी हम पूरेंगे (भरेंगे); आपको कुछ नहीं करना।

उन्होंने यह भी बोला था कि –

हम आपको भगतजी महाराज, जागास्वामी, शास्त्रीजी महाराज, महंतस्वामी जैसे बना देंगे।

उनके संकल्प से, उनकी प्रार्थना से, उनके भजन से, उनके पुरुष प्रयत्न से ये अपना गुणातीत बाग खिल उठा है।

इसी तरह पू. हरिप्रसादस्वामिजी इतनी मेहनत करते हैं, इतना विचरण करते हैं, सब जगह पर घूमते हैं। योगीजी महाराज का जो संकल्प था, उसी उद्देश्य को - संकल्प को साकार करने के लिए वे घूमते रहते हैं और इतना सारा भीड़ा उठाते हैं। अपने साहेबजी भी बहुत विचरण करते हैं। उनकी तबियत ठीक नहीं है, उनकी कमर में दर्द होता है, फिर भी सब जगह घूमते ही रहते हैं – घूमते ही रहते हैं। इसी तरह **गुरुजी** भी ऐसा ही प्रयत्न करते हैं... इनका ऋण अदा करने के लिए हमें बहुत कुछ करना है। कल की बात हमने सुनी थी। उन्हों**ने बोला मुझे इन सब का विश्वास है;** वो बात सही है, मैं भी मानता हूँ कि **उनको आपके ऊपर विश्वास है।** फिर भी मैं आपको कहना चाहता हूँ कि **उनका जो विश्वास है, वो कभी भी टूटना नहीं चाहिए।** ये सत्संग जो है, वो जितना आसान हम सोचते हैं, वैसा नहीं है। हमें अपनी प्रकृति, अपने स्वभाव, अपने मन और अपनेपन के साथ लड़ना है और... जब तक **हम मुकुंदजीवनस्वामी की – गुरुजी की आंतरिक प्रसन्नता के पात्र नहीं होते हैं – नहीं बनते हैं तब तक अपना मिशन पूर्ण नहीं होता।** ये प्रयत्न जो वो कर रहे हैं, वो काकाजी, पप्पाजी और योगीजी महाराज का जो संकल्प है – 'पृथ्वी के ऊपर अक्षरधाम लाने का' – इसी के लिए ये प्रयत्न करते हैं। बहनों ने भजन में लिखा है कि ये सब **गुणातीत पुरुष** जो हैं, वो **पहले अपने दास बनते हैं।** हम जो बोलते हैं, वैसे वो करते जाते हैं, हमारा मनोरथ पूरा करते हैं, संकल्प पूरा करते हैं। इसलिए हमें बहुत आनंद आता है – ब्रह्मानंद जैसा आनंद आता है। **मगर** उसके बाद **दूसरी स्टेज** वो है कि **हम उनका संपूर्ण विश्वास सम्पादन कर लें। तब हमारा अपना भाव दूर करने के लिए वे हमें दास बनाते हैं और अपनी अंगुली पर हमें नचाते हैं। तब हमें उनका विश्वास और निर्दोषबुद्धि रखनी है, दिव्यभाव रखना है और उनकी कसौटी में से पास होना है।** उसके बाद आध्यात्मिकता में जो **तीसरा स्टेज** आता है वो है – **'एकता का भाव'**। जैसे कि गोपियों ने बोला – **'मैं कृष्ण, मैं कृष्ण, मैं कृष्ण'। इसी रास्ते पर ले जाने के लिए गुरुजी अपने लिए बहुत सारा परिश्रम उठाते हैं।** ये **सब कुछ उन्हीं के संकल्प से होने वाला है, वो ही कराने वाले हैं; मगर किसी भी संजोगों में, परिस्थिति में – हमारा मन बुद्धि - तंत्र - अपनापन साथ दे या न दे, हमें उन्हें साथ देना ही है।** अभी हम सबने बताया कि **गुरुजी** ने ये किया, ये किया; ये किया ठीक है सब कुछ किया मान लेते हैं, मगर उस**का हमें ऋण चुकाना है। वो क्या ? कि हमें उनमें विश्वास रखकर अपनी बुद्धि, प्रकृति, स्वभाव, तन्त्र सब कुछ छोड़कर उन्हीं की आज्ञा का पालन करके उन्हीं के साथ ऐसी एकता, आत्मीयता – ऐसी निर्दोषता सिद्ध करनी है। फलस्वरूप काकाजी का जो संकल्प था और जैसे गुरुजी काकाजी के वारिसदार बन गए – काकाजी स्वरूप बन गए – वो जो सोचते हैं, वैसे उनका काम हो जाता है – इसी कक्षा पर हमें ले जाने के लिए गुरुजी सब प्रयत्न करते हैं। इसमें हमें उनको सहकार देना है और यह हमें उनका ऋण चुकाना है, काकाजी का ये संकल्प हमें साकार करना है।**

तो, आज **आप सब को मेरी ये विनती है कि जो कुछ भी हमें मिला है – जो कुछ भी हमें प्रेम से गुरुजी देते हैं, इतने से ही संतोष नहीं मानना है। आगे हमें बहुत कुछ करना है; मगर वो अपने हिसाब से नहीं होगा।** काकाजी बोलते थे कि सेंका हुआ पापड़ भी हमसे नहीं टूट सकता है। तो हम और क्या करेंगे ? **ये हमारे बस की बात नहीं है। उन्हीं के संकल्प से – उन्हीं की प्रार्थना से, उन्हीं के प्रयत्न से**

ही ये काम होने वाला है। उनके अंतर की प्रसन्नता हमें प्राप्त होगी, तो जरूर हमें वो प्राप्त होगी। मगर ये करने के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमें क्या करना है? हमें जानना चाहिए कि अपना सिलेबस क्या है? इसीलिए मैं बताता हूँ कि हमें ये डॅस्टीनेशन, ये कक्षा पर पहुँचना है जिसके लिए मुकुंदजीवनस्वामी – अपने गुरुजी, हमारे लिए आत्मीयता के नाते इतना पुरुष प्रयत्न करते हैं। वे इतना परिश्रम करते हैं, इतनी मेहनत करते हैं, इतनी प्रार्थना-संकल्प करते हैं; हमें उनके साथ लेने। उन्होंने जो कुछ भी किया है, उसके बदले में हम से वो जो कुछ भी मांगे; वो हमें उनको देना है। ऐसा संकल्प करके, ऐसी प्रार्थना करके यहाँ – आज अक्षरधाम की सभा में – जहाँ सब गुणातीत पुरुष विराजमान हैं – वहाँ **हम सब संकल्प करें, प्रार्थना करें कि गुरुजी को हम से जो करवाना है, उसमें हम उनको साथ दे सकें। चाहे अपनी कितनी भी बड़ी कसौटी हो। मैं प्रकृति पुरुष के अंदर की बात नहीं करता हूँ, भौतिकवाद की बात नहीं करता हूँ; वो तो उनके संकल्प से सब कुछ हमें दे देंगे; मगर हमें जो लड़ना है वो अपने खुद के साथ लड़ना है, अपने मन के साथ लड़ना है, अपनी बुद्धि के साथ लड़ना है, अपनी प्रकृति के साथ लड़ना है, अपनाभाव ('स्व' का भाव) जो है उसी के साथ लड़ कर उससे हमें जुदा होना है, अतिरिक्त (खाली) होना है और गुरुजी को साथ सहकार देना है।**

आज आप सब को मेरी विनती है कि यहाँ से यह संकल्प करके उठें कि काकाजी, पप्पाजी और गुरुजी ने हमारे लिए जो कुछ भी किया है, उनका ऋण अदा करने के लिए हम कुछ भी करने को तैयार हों। इसी संकल्प के लिए स्वामिजी, साहेबजी, गुरुजी और मंचस्थ सब महानुभाव हमें बल दें, हमारे लिए प्रार्थना और भजन करें कि हम इनको संपूर्ण साथ दे सकें और... ये सब हम सहजता से कर सकें – ऐसी प्रभु को प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

वशी, शांतिभाई, अक्षरविहारीस्वामिजी और सभी वक्ताओं ने गुरुजी का अद्भुत गुणगान गाकर सबको आनंद करवाया। मानव की कोई ताकत नहीं है कि अपने पुरुष प्रयत्न से वो जीव को पॉज़ीटीव बना सके। भगवान को रखने वाले माँ जैसे संत का जब आशीर्वाद मिल जाएं, तो पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ पॉज़ीटीव होती हैं। पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ पॉज़ीटीव होंगी; तो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार शुद्ध-पवित्र होगा।

आज ऐसी एक बात करनी है–दिल से कहता हूँ। काकाजी ने अद्भुत संकल्प करके गुरुजी को धरती पर रखा। गुरुजी का जीवन अद्भुत पॉज़ीटीव है, सरल है। वो हरिभक्तों के साथ खूब आत्मीय हैं। देह से, मन-बुद्धि से अधिक हरिभक्त उन्हें ज्यादा प्यारे लगते हैं। ***'हरिभक्तों की सेवा मेरे प्रभु की सेवा समान है'*–ऐसी मंगलकारी भावना से दिल्ली में रहते हुए गुरुजी 'योगी डिवाइन सोसाईटी' के समाज का पालन-पोषण करते हैं।** इससे काकाजी, बापा खूब राजी होते होंगे–खूब राजी होते होंगे।

मैंने अभी कहा – पांच ज्ञानेन्द्रियाँ कभी अपने पुरुष प्रयत्न से पॉज़ीटीव और पवित्र होने वाली नहीं हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियाँ यदि पॉज़ीटीव और पवित्र नहीं होंगी तो, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार कभी भी पॉज़ीटीव होने वाला नहीं है। मानवीय जीवन पशु समान ही रहेगा। आज एक संकल्प सब करना – **एक माँ जैसा साधु बापा**

ने – काका ने रखा है। उसके साथ मैत्री रखना। बस! मैं गुरु-शिष्य का संबंध की बात नहीं करता; जीवन में एक ऐसा मित्र होना चाहिए, जहाँ सरल होना चाहिए। खुल्ले दिल से अपनी बात – हृदय की बात – मन की उदासी-उलझन की बात, मन के समाधान के लिए – मन को पवित्र बनाने के लिए किसी ऐसे संत के हो जाएं – उससे ऐसी मैत्री हो जाए, तो समाज में और संसार में आप भले जीओ और व्यवहार करो – नो प्रॉब्लम। समस्या का समाधान करने के लिए आप जहाँ इतना प्रयत्न करते हो, मगर **आत्मा पर लगा हुआ जनम और मरण का जो रोग है और आत्मा पर पड़ी हुई गंद, जिसे गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है- काम, क्रोध, लोभ ये नरक का द्वार हैं और... गुणातीतानंदस्वामिजी ने बातों में कहा है हठ, मान, ईर्ष्या ये नरक के द्वार हैं... उसमें से आत्मा को मुक्त करने के लिए माँ जैसे संत की आवश्यकता है ही। तो काकाजी के आशीर्वाद से-संकल्प से, गुरुजी आज धरती पर हैं।** दिल से कहता हूँ कि **गुरुजी के साथ यदि ऐसी मैत्री हो जाएगी, तो आपका ये तंत्र कैसा भी होगा, परिवार में आत्मीयता प्रगट हो जायेगी। परिवार में स्वर्ग प्रगट हो जायेगा, अक्षरधाम प्रगट हो जायेगा।** अच्छी तरह से सुनना – देह को मंदिर बनाने के लिए 'आशीर्वाद' इज़ ए 'मस्ट'। **गुरुजी जैसे संत के साथ दोस्ती हो गई, तो आपकी इन्द्रियां पॉज़ीटीव हो जाएंगी।** वो खूब सरल-काकाजी के पास खूब सरल। काकाजी की कोई आज्ञा उनके दिमाग़ में ठीक न बैठे तो भी, **काकाजी के साथ उनकी प्रीति इतनी अनोखी थी कि वो काकाजी को कभी 'ना' शब्द नहीं कह सके। सरलता से काकाजी के साथ जीवनभर वो रहे और वर्ताव किया।** काकाजी राजी हो गए; इसके फलस्वरुप, आशीर्वाद से वो अंतर से सुखी हैं, अच्छी तरह भजन कर सकते हैं। ३०-३० मिनिट, ६०-६०, मिनिट २-२ घंटे तक भजन करते हुए भी उनकी आत्मा में विषय का एक संकल्प प्रगट नहीं होता है। इतना वो डूबे हुए व्यक्ति हैं।

दिल्ली का कोई भाग्य है, भगवान स्वामिनारायण ने और काकाजी ने ऐसे संत को यहाँ रखा। मैं तो आप सबको एक ही विनती करता हूँ – ऐसे संत के साथ एक मैत्री हो – **जीवन में एक अच्छा मित्र होना चाहिए। ऐसा मित्र बनने के लिए गुरुजी योग्य है। उसे कोई स्वार्थ नहीं है, उसको कोई अपेक्षा नहीं है, उसको कोई राग-द्वेष नहीं है। उनके हृदय में एक ही भावना है कि मैं काकाजी की सेवा करुँ – करता ही रहूँ। काकाजी के अंतर के आशीर्वाद धारण करके – काकाजी को सर्वांगीण – रोम-रोम में प्रगट करने की भावना से वो आज सेवा कर रहे हैं।** मैं आप सबको यही कहता हूँ – **उनके साथ मैत्री बांधना। उनके वचन को सरलता से मानना। फलस्वरूप आपका संबंध बहुत अच्छा हो जायेगा। आपका जीवन पॉज़ीटीव हो जायेगा, इन्द्रियाँ पॉज़ीटीव हो जाएंगी। आपका संसार स्वर्गमय हो जायेगा।**

आज मंगलकारी शुभ दिन है; भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिव-शक्ति, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी महाराज, महंत स्वामी, डॉक्टर स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी सबके चरणों में एक ही प्रार्थना है आप सबको प्रॉपर – पॉझीटीव बल-बुद्धि शक्ति दें, जिसके फलस्वरूप ऐसे माँ जैसे संत के साथ आपको मैत्री हो जाए, जिसके फलस्वरूप आपका संसार स्वर्गमय हो।

प.पू. साहेबजी (ब्रह्मज्योति)

प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, संतों, संत भाईयों, सब बहनों और आमंत्रित मेहमानों के बीच में ये अवसर मिला है, हम सब भाग्यशाली हैं। **आज से बराबर ४७-४८ साल पहले '६१ में गढ़पुर में** योगीजी महाराज का सेवन्टी फर्स्ट बर्थ-डे मनाया जा रहा था। स्वामिनारायण संप्रदाय में उस दिन बहुत बड़ी क्रांति घटी। **योगीजी महाराज ने** उस समय **५१ नव युवानों को दीक्षित किया।** पढ़े-लिखे युवानों का बहुत बड़ा काम हुआ। **वो ५१ युवानों में २३-२४ तेईस-चौबीस साल के युवान 'गुरुजी' भी शामिल थे। बापा का सेवन्टी फर्स्ट बर्थ-डे था तब, आज गुरुजी का सेवन्टी फर्स्ट बर्थ-डे है।** उस टाइम पर किसी ने यह सोचा भी नहीं था। गढ़पुर के समैया में हम सब भी थे। इतने लोग इकट्ठे हुए थे, उसको मॅनेज करना भी बहुत मुश्किल काम था। रियली, योगीजी महाराज हम सबके बीच में जो काम करके गए, हमको जो देकर गए – ये अब दिखाई पड़ता है। उस टाइम पर भारत स्वतंत्र हुए १४-१५ साल ही हुए थे। बड़े-बड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं, नेताओं सब बोलते थे, बात करते थे– *'पढ़े-लिखे युवानों की देश को जरूरत है, साधु बनाकर क्या करोगे?'* उस टाइम पर योगीजी महाराज ने किसी को कुछ जवाब नहीं दिया। **ऐसे महान पुरुष आते हैं, उसके बारे में सब कुछ बोला जाता है, कहा जाता है। वो सबका सुन लेते हैं, लेकिन सबकी भलाई के लिए ही काम करते रहे हैं।** योगीजी महाराज ने ये काम किया। पढ़े-लिखे युवानों में वैराग्य उत्पन्न करके समाज को दिया है। हम देखते हैं कि **पूरी पृथ्वी पर ये संत लोग छा गए हैं और मानव जीवन को बदल रहे हैं। इनमें से एक ये सेंटर है – दिल्ली का।**

प.पू. प्रमुखस्वामिजी ने बताया– ***'परस्पर प्रीति फैलाए – वही धर्म।'*** आपस-आपस में मेल-जोल करना, प्रीति करना, प्रेम करना वही श्रेष्ठ धर्म है और ऐसे धर्म को स्थापित करने के लिए ही रामचन्द्र भगवान, कृष्ण भगवान, स्वामिनारायण भगवान मानव रूप में आए। और... **हम देखते हैं इधर एक प्रेम का वातावरण छा रहा है।** धर्म का दूसरा अर्थ होता है प्रेम – डिवाईन लव, जिसके पीछे कोई एक्सपेक्टेशन नहीं, कोई अपेक्षा नहीं, सिर्फ देने की बात है। ऐसा प्रेम संतों से मिलता है और हम भी ऐसे बन जाते हैं। गुरुजी ने दिल्ली में बैठकर ऐसा प्रेम प्रवाहित किया है; ये युवानों को सच में मेरा-सबका सलाम है। बहुत अच्छा कार्यक्रम दिया। और... सबने बोल कर अपनी भक्ति अदा की। दोनों भक्ति एक ही हैं...

दादुकाका आत्मबुद्धि – प्रीति की बात करते थे। एक असल दृष्टांत से वे प्रीति और आत्मबुद्धि को डिफरन्शियेट करते थे। एक लड़का बाहर गया हो और ८-९ बजे तक आने वाला वो लड़का रात को १२ बजे तक घर नहीं आया; तो माता-पिता बहुत चिन्तातुर हो जाते हैं। वो नींद भी नहीं ले सकते, १२ बजे जब लड़का दरवाजा खटखटाता है, तो लड़के के पिताजी दरवाजा खोल कर – *कहाँ गायब था?* कहते हुए उसको डांटने लगेंगे। वो उसको जो डांटते हैं, वह उसे अपने लड़के के प्रति की आत्मबुद्धि है, लेकिन उसकी मधर को उससे प्रीति है। तो, वो पीछे से बोलेगी कि – *बेटा १२ बजे हैं, तुझे भूख नहीं लगी है? तूने कहां खाया?* वो उसके दोष नहीं देखती है, उसकी गलती नहीं देखती है। वो लगाव से बस चिंता करती है। **आत्मबुद्धि में थोड़ा दोष बताने का, थोड़ा डांटने का आ जाता है; प्रीति में कुछ नहीं आता – सिर्फ प्रेम देना-देना-देना।**

ऐसी प्रीति प्रसारे, वही धर्म है और वही धर्म इधर दिल्ली के सेंटर में दिखाई पड़ता है। गुरुजी का ड्रेस पहन कर आशीष का जो छोटा-सा बच्चा आया था; ओह देखो! एक छोटा बच्चा अपने माँ-बाप से दूर जा ही नहीं सकता। उसको चॉकलेट दो तो आपके पास आएगा, पर फिर भाग जायेगा। लेकिन वो गुरुजी के पास खड़ा ही रहा, खड़ा ही रहा, खड़ा ही रहा। **एक छोटे से बच्चे से लेकर मल्कानी अंकल तक सबको एक सरीखा प्रेम जो मिलता है, वो संत दे सकता है; दूसरे की ताकत नहीं ऐसा प्रेम देने की।** वो उनके पास है–बहुत है।

गुणातीतभाव-वो साधु का दर्शन करवाता है। गुणातीतानंदस्वामी ने बात करी है– *'मानव देह मिलना दुर्लभ है। मानव देह मिले, तो ऐसा संत मिलना दुर्लभ है। ऐसे संत मिले, तो उसके साथ हेत होना मुश्किल है। उसके साथ हेत होता है, तो उसकी आज्ञा में रहना मुश्किल है। उसकी आज्ञा में रहते हो, तो उसका विश्वास पाना मुश्किल और उसका विश्वास पाते हो, तो निष्कपटभाव से उसके साथ बरतना मुश्किल।'* **गुरुजी चारों हर्डल्स पार करके गुणातीत भाव में रहते हो गए!**

योगीजी महाराज के टाईम पर बा और काकाजी के प्रति इन्हें खूब प्रेम-हेत था। दादुकाका के प्रेम-हेत से उन्होंने उनकी आज्ञा का पालन किया। **उनका मन माने या न माने, बुद्धि स्वीकार करे या न करे, फिर भी काकाजी महाराज और योगीजी महाराज जो बोले वो ही करना है–यह उनके भीतर में था। हम आज्ञा पालें या ना पालें, वो महत्त्व की बात नहीं है। पर आज्ञा पालने का आलोच (झंखना), आज्ञा पालने की अंदर की जो भूख-तृष्णा है, वो हमें बदल डालती है। गुरुजी को दादुकाका में पूर्ण विश्वास।** काकाजी ने कहा– दिल्ली जाओ, तो गए। दिल्ली जाकर मैं क्या करूं? कोई है भी नहीं, कोई सत्संगी भी नहीं है, कोई रहने का स्थान नहीं है; तो कहां जाऊं? लेकिन काकाजी के प्रति विश्वास था कि वो जो कहें वही करना है; इसमें मेरा हित है। वो हितकर ही बात करते हैं, मेरे लिए अच्छी बात होगी। ऐसा विश्वास करके–आज्ञा में विश्वास रखकर काम करने लगे और वह भी–पूरे निष्कपटभाव से। **गुणातीतानंदस्वामी ने कहा कि ऐसा जो साधक है, वो अपने गुरुरूप बन जाता है–गुणातीतभाव में वो पहुंच जाता है।** कल वो बोले कि मैं कितना भी बड़ा हो जाऊँ, लेकिन स्वामिजी और अक्षरविहारीस्वामी के पास दास हूँ। **वो बोलते नहीं हैं, लेकिन उनका एक्शन हमको दिखाई पड़ता है।** अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का यह रहस्य है। प्रभु रूप होने पर भी, प्रभु जैसा ऐश्वर्य पाने पर भी, प्रभु जैसा उनका मान-मर्तबा होने पर भी, वो खुद को कभी प्रभु नहीं मानते; प्रभु का सेवक मानते हैं, प्रभु का दास मानते हैं। जो कुछ मैं हूँ, जो कुछ हो रहा है, मेरे प्रभु की कृपा से-मेरे गुरु की कृपा से हो रहा है। यूं भीतर में दासत्वभाव रहता है और ऐसे दासत्वभाव वाले साधु से जुड़ जाने से कभी भी हम गलत नहीं होंगे, क्योंकि वो हमको प्रभु में जोड़ेंगे। **जो साधु प्रभु से जोड़ता है, जो साधु प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कराता है, ऐसी हमें समझ देता है, ऐसा साधु मिल जाना, वही हमारे पर भगवान की बहुत बड़ी कृपा है।**

तो, हम सब पर ऐसी कृपा है, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी जैसे संत की भगवान ने हमको भेंट दी है। तो उनके साथ अकड़ना क्या? हरिप्रसादस्वामिजी ने अपने आशीर्वाद में बताया कि ऐसे गुरु के साथ, ऐसे संत के साथ मैत्रीभाव कर देना।

...गुरुजी जो भी करेंगे हमारे हित के लिए करेंगे, ऐसा भरोसा रखकर उनके साथ जुड़ जाएं, वो गुरुजी के साथ मैत्रीभाव है। ऐसा मैत्रीभाव दिल्लीवासियों में है–दिखाई पड़ता है। संगठनभाव, कुटुंबभाव–वो सत्संग की बहुत बड़ी उपलब्धि है और ये इधर दिखाई पड़ता है। इसलिए सबको इधर आनंद आता है। सबके प्रति प्रेम है, सबके प्रति भाव है, सबकी सेवा की उमंग है। ये आया कहां से? गुरुजी के प्रेम से, गुरुजी की गाईडन्स से, गुरुजी की बातों से, गुरुजी की प्रार्थना से, गुरुजी के साथ रहने से, गुरुजी के एक्शन्स से, उनके वर्तन से–ये सब हमारे में प्रगट होता है। ऐसे गुरुजी मिले–भगवान की बहुत बड़ी कृपा है। ये कृपा में स्नान करके, ये कृपा में आनंद करना। **आनंद में जो विक्षेप लाए, ऐसी बातों को निष्कपटभाव से 'वीथ रिस्पॅक्ट' बोल देना। याद रखो, बोल देना और निष्कपटभाव में बहुत फर्क है। निष्कपटभाव में अपने भीतर का दासत्वभाव है।**

काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी में उनको कोई फर्क नहीं था। 'काकाजी ऐसे करते थे, पप्पाजी ऐसे करते थे, स्वामिजी का ऐसा नहीं है'–ऐसा फर्क इन्होंने नहीं करा। इनमें से प्रभु करते हैं और प्रभु जो करते हैं, सबकी आत्मा के कल्याण के लिए करते हैं। **यही बात उन्होंने मानी और हम सबको सिखाई।** इसलिए सभी के प्रति सबको यहाँ बहुत भाव है, बहुत प्रेम है, सबकी सेवा की उमंग है। **यही सच्चा गुणातीत समाज का दर्शन है। ये समाज इधर दिल्ली में स्थापित करके गुरुजी! आपने बहुत बड़ा काम किया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, अभिनंदन।** आपकी तबियत अच्छी रहे; ***पूरा गुणातीत समाज ऐसा बन जाए, आज संकल्प करना है आपको।***

...स्वामिनारायण भगवान ने बताया–'निर्दोषभाव' एक सच्ची सेवा है। निर्दोषभाव कब रहेगा? बाह्य कुछ किसी का देखे बिना, संबंध से देखेंगे–संबंध के साथ उसको जोड़ेंगे, तो हमारे भीतर ये भाव रहेगा। ये भाव से जब हम मिलेंगे, तो फिर हमारे भीतर का सब निकल जाएगा। काम, क्रोध, लोभ जीतने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ेगा; वो निकल जाएगा। दूसरे आश्रमों में आज साधक साधना कर रहे हैं; सुबह ४ बजे उठकर नदी में जाते हैं, पर्वत पर जाते हैं, संसार छोड़ देते हैं, धंधा-बिज़नेस सब छोड़ देते हैं, लेकिन कुछ नहीं पाते हैं। सब रख कर, संसार में रहते हुए हम भीतर से काम-क्रोध, दोष रहित हो जाएं; जैसे काकाजी बोलते थे– उसकी चाबी मिल जाए, सही टॅक्नीक मिल जाए। **सही टॅक्नीक यह है–स्वामिनारायण भगवान का आसरा, ऐसे गुरुजी जैसे के साथ लगाव हो जाना, प्रेम से ऐसे दो हाथ जोड़कर आज्ञा पालना और सत्संगी में सुहृद्भाव रखो–काम पूरा हो गया!** *ऐसे सुहृद्भाव से जीवन जीने का एक अद्भुत प्रयास इधर हो रहा है। आप सबको मिल कर, आप सबके साथ रह कर हम सबको भी बहुत आनंद आया। इसलिए गुरुजी को फिर से अभिनंदन, धन्यवाद।*

आप देखो, **सिक्स ओ क्लाक से सब बैठे हैं। दस बजे हैं और किसी को झपकी तक नहीं आई, कंटाला नहीं आया। ये अक्षरधाम की सभा है।** मैं सोचता था–पहले के टाइम में जो बात होती थी और अब! हर साल बातों में स्पिरीच्युआलिटी आ रही है–इतना फर्क मिल रहा है। अपने जगरांव वाले नरेन्द्र शर्मा और गाबा साहेब सायंटिस्ट जो अभी आए हैं, लेकिन उन्होंने खूब अच्छी बातें बताई। उन सबकी बातों का लेवल हमको इतना डूबो देता है कि **हम ४ घंटे बैठे लेकिन बोर नहीं हुए; वर्ना तो बोरिंग सभा होती, तो एण्ड**

में जब स्वामिजी के आशीर्वाद आते तब ७५ प्रतिशत तो गायब हो जाते। इसकी बजाय पूरी सभा भरी हुई है, इसका मतलब ये है कि यहां प्रभु प्रगट है। ऐसे संतों के द्वारा एक डिवाईन वातावरण इतना अच्छा बना है कि हमको भीतर से आनंद आया। देखने में आनंद आता है, सुनने में आनंद आता है, दर्शन में आनंद आता है – वो बहुत बड़ा काम हो रहा है। तो हम बहुत-बहुत नसीबदार हैं। ऐसी कृपा में सदा स्नान करते रहें और प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बने रहें – ऐसे गुरुजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी के सानिध्य में बस आनंद ही करा करें, इसमें विक्षेप करने वाले जो भी हमारे भाव हैं, उसको हे प्रभु! टाल दो, ऐसी आपके प्रागट्य दिन की हम सबकी प्रार्थना। जय स्वामिनारायण।

✡✡✡

२९ नवंबर,'०८ अन्नकूट – नूतन वर्ष की सभा

प.भ. विनोदजी (मुंबई)

...मार्च में कुछ काम से मैं दिल्ली आया था और ओ.पी.जी ने बोला – 'चलिए हमारे साथ, हमारे गुरुजी हैं।' **बड़े दिनों से मेरी इच्छा थी कि गुरुजी से मिलूं; कई सालों से गुरु ढूंढ रहा हूँ; मैं कई गुरुओं को मिला हूँ। जब यहां आया तो गुरुजी ने दूर से ही देखा – बड़े प्यार से देखा, बहुत अच्छा लगा – बहुत सुख मिला** और जिस दिन **मैं मेरे काम के लिए जा रहा था**, उस दिन **मैंने गुरुजी को कहा – आपका आशीर्वाद चाहिए, मेरा ये काम हो जाए। उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया!**

शाम को वापस आकर मैंने उनको बोला कि मेरा काम हो गया; फिर भी गुरुजी ने कुछ नहीं बोला!! मैं इनकी माया समझ गया... बेझीकली माया ये है **कि आपको गुरुजी से कुछ नहीं मांगना चाहिए। आप मुंबई में हों, दिल्ली में हों या कहीं भी हों** – मुझे इतना मालूम है कि **अगर आप गुरुजी को चाहते हैं, उनका ध्यान करते हैं – तो आप पर उनकी कृपा बनी रहेगी**, कुछ भी आप करें।

ये सप्टेंबर पांच तारीख को मैं अच्छा खासा घर में था... जुकाम सर्दी हो गया और... कुछ ऐसा प्रसंग हो गया कि मुझे अस्पताल में भर्ती किया गया। डॉक्टरों ने बोला कि कुछ बोल नहीं सकते कि ये स्टमक कैंसर है कि क्या है। मेरे छोटे-छोटे तीन बच्चे हैं – परिवार है। सब लोग बड़े परेशान हो गए कि ये क्या हुआ? मोबाइल बंद, फोन बंद; आई.सी.यू में रख दिया मुझे। कम से कम एक महीने तक मैं बाहर नहीं निकला। मतलब, फोन पर भी किसी से बात नहीं कर पाया। दो बार **गुरुजी** मेरे को रात में मेरे सपने में आए और बोले – *'चलते रहो, चलते रहो'*। तो, मैं गुरुजी को बोलता हूँ – 'अब क्या चलूं? डॉक्टर बोलते हैं – अब डेढ़ दो साल और बचा है'। लेकिन, गुरुजी यही बोलते रहे कि – *'चलते रहो'*। मैंने सोचा – इसमें भी कोई माया है? ऑपरेशन हुआ, स्टमक का थोड़ा पोर्शन जो होता है – एन्टस्टाईन का - वो निकाला गया। उसको टेस्ट के लिए भेजा गया... आख़िर (डॉक्टर ने) बोला कुछ नहीं है तुमको। यूं बाल-बाल बच गया! इससे बड़ी माया नहीं हो सकती।

बिना कुछ लिए, बिना कुछ समझे गुरुजी आप के ऊपर स्नेह, प्रेम सब कुछ दे सकते हैं। आपको सिर्फ उनको प्रेम देना है। आपका जो फेइथ है, वो अडिग होना चाहिये और आपको उनसे कोई सवाल नहीं पूछना; उन्होंने जब आप पर कृपा करनी है, वो खुद ही करेंगे।

✡✡✡

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

निमंत्रण

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

3 फरवरी 2009, मंगलवार प्रातः 8:30 से 11:00

अशोकविहार 'ताड़देव' श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

और

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन मनाएंगे......

इस मंगलकारी अवसर पर इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	23.1.2009,	शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2)	दि.	26.1.'09,	सोमवार	—	भारत का प्रजासत्ताक दिन
(3)	दि.	31.1.'09,	शनिवार	—	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन
(4)	दि.	3.2.'09,	मंगलवार	—	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन** और **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर – दिल्ली का पाटोत्सव**
(5)	दि.	6.2.'09,	शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत
(6)	दि.	15.2.'09,	रविवार	—	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(7)	दि.	20.2.'09,	शुक्रवार	—	एकादशी – व्रत
(8)	दि.	21.2.'09,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(9)	दि.	23.2.'09,	सोमवार	—	महाशिवरात्रि, व्रत
(10)	दि.	25.2.'09,	बुधवार	—	प.पू. गुरुजी की प्रागट्य तिथि
(11)	दि.	7.3.'09,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन एकादशी – व्रत
(12)	दि.	10.3.'09,	मंगलवार	—	होली, होलिका दहन
(13)	दि.	11.3.'09,	बुधवार	—	धुलेन्डी, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि
(14)	दि.	13.3.'09,	शुक्रवार	—	**प.पू. गुरुजी का ७२वां प्रागट्य दिन**

(28-29 मार्च, शनि - रविवार की सायं ताड़देव – दिल्ली में मनाया जाएगा।)

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052